वी गेट एस डीयर!

कैसे हो प्रमोद!

उससे मै प्यार नही करता था. पर सपने मैने उसे थोक के भाव मे दिखा रखे थे। अजीब सी बात तो ये थी कि उन दिनो मेरे झूठ सच मे मेरी ऑखे भी मेरा साथ देती थीं। वो मुझसे प्रेम करने लग पड़ी थी। इस सम्बन्ध ने एक गलत मोड़ ले लिया है. ये जानते हुए भी मै चुप रहा। एक न एक दिन मुझे दिल्ली छोड़ देनी थी जिसके साथ इस सम्बन्ध का भी अन्त जुड़ा था। उसे मेरे बर्लिन जाने के वारे मे तो पता था. पर हमारे सम्बन्ध के अन्त का उसे कोई आभास न था। मैने कई बार सोचा भी कि उसके सामने सारी सच्चाई स्पष्ट कर दूॅ पर ये हिम्मत मै अपने मे जुटा न सका। उसकी ऑखो मे मेरे द्वारा छींटे गए आश्वासनों के बीज सपनो की शक्ल मे जन्गली झाड़ों की तरह पनप चुके थे।

आज के दिन मे अगर मै अपनी गलती मान भी लेता हूॅ तो इससे न तो मेरा अपराध भाव कम होता है और न उसका दर्द। आज बीस वर्षो के बाद भी मेरा ये सम्बन्ध मुझसे अपना हिसाव मॉगने खड़ा हो जाता है। मै अपनी आत्मा को बस एक ही बात का दिलासा देने लग पड़ पड़ता हूॅ कि मेरे पास एक अन्तःकरण है और मै सारी गल्तियॉ स्वीकारता हूॅ।

निश्छल ऑखे तो इस परिवार मे सभी की ही थीं और इन्ही ऑखो के साथ मैने छल किया। पता नही कौन सा कम्पलेक्स मुझमे उन दिनो था!मै आखिर क्या सावित करना चाहता था!कोहरों की धुन्ध मेरे जीवन मे अविराम आती रही जिनके छॅटते ही बजाय सूर्य के तमतमाने के एक नया धुन्ध मुझे फिर से घेर लिया। सूर्य देवता तो आज तक मुझसे नाराज बैठे है। फिर भी मै ये प्रयास करने जा रहा हूॅ घनघोर अन्धेरे मे अपने बीस वर्ष पहले के दिनो मे लौटने का। मुझे उसका सही नाम तक लेने मे डर लग रहा है पर मै उसका नाम बदलना नही चाहता। उसने कोई गलती नही की। उसने सिर्फ मुझपर भरोसा किया. मुझसे प्यार किया। इस बात की उसे कोई भी सजा नही दी जा सकती।

उसका नाम माधुरी था। वो एक गर्वान्वित माता पिता की दूसरी वेटी थी। उसकी बड़ी बहन का नाम मदिरा और छोटे भाई का नाम आलोक था। उसके पिताजी मिनिस्ट्री ऑफ एजूकेसन मे कार्यरत थे और उसकी मॉ एक गर्ल्स स्कूल मे प्रिंसिपल थीं। इनका अपना एक निजी मकान दिल्ली के एक सभ्रान्त इलाके सरोजनी नगर मे था। माधुरी मैक्स म्यूलर भवन मे जर्मन की क्लासें लेती थी। ग्रुन्ड स्टूफे आइन्स मे वो मेरी टीचर थी। उसे कम से कम मै अनाकर्षक नही कह सकता। अपनी बालें वो पीछे की तरफ झाड़ती थी। उसका पूरा ललाट खुला होता था। उसकी नजरें हमेशा झुकी रहती थी यहॉ तक कि क्लासों मे भी। मुस्कराने पर उसके दोनो गालों मे गढे पड़ते थे। थोड़ा बहुत वो शर्मिला टैगोर को इमिटेट करती थी। मैक्स म्यूलर भवन से उसे कितने पैसे मिलते थे ये तो मुझे पता नही है पर वो प्राइवेट दो तीन टयूशने भी देने जाती थी। महीने के अन्त मे वो अपनी सारी कमाई अपने मॉ के हॉथों पर रख देती थी।

दिल्ली मे सिवाय जर्मन सीखने के मेरे पास दूसरा कोई काम नही था। मेरी क्लास सुवह आठ बजे शुरू होती थी और दस बजे खत्म हो जाती थी। चार दिन हमारी क्लासें मिसेस ब्रायर नामकी एक जर्मन औरत लेती थीं जिसके पति मैक्स म्यूलर के डायरेक्टर भी थे। उनके गले मे न जाने कितनी मालायें लटकी होती थीं। कभीं कभीं मुझे ऐसा लगता था. जैसे वो सारा जनपथ का बाजार ही खरीद ली हों। पहनने को तो वो एक लम्बा घुटने तक की फ्रॉक पहनती थीं लेकिन सामने बीचो बीच एक चीर की वजह से उसकी टांगे खुली ही रहती थीं। बैठने पर उसकी एक टांग दूसरे टांग पर होती. जो वो रह रहकर बदलती रहती थीं। कभीं कभीं तो हमे उसकी चडढी तक दीख जाती थी। सप्ताह मे एक दिन हमारी क्लास माधुरी लेती थी।

उसे हमेशा मैने दो कोर्ड के पैंटो मे देखा. जो वो बदल बदल कर पहनती थी। एक का रंग भूरा और दूसरे का गाढा पीला था। उसके पास एक कैन्वस का जूता था जो मुझे तो इर्म्पोटेड ही लगता था। ब्लाउजें वो बदलती रहती थी जिसके गले तक के बटन बन्द होते थे। मेरे अलावे क्लास के कई लड़के उसकी क्लास का इन्तजार करते थे। क्लास मे बस मै ही एकमात्र देहाती समझा जाता था। बाकी अपने को डेलियाड कहते और समझते थे। दो चार कमीज और वेलबाटस मेरे पास भी थे. लेकिन मै खादी का कुर्त्ता पैजामा ही पहनता था और इन्ही कपड़ों मे मैक्स म्यूलर भी जाता था। न मेरे पास जीन्स वीन्स थी और न कोई इम्बलेम वाली टी शर्ट। दिल्ली के वेस्ट पटेल नगर मे मेरे पास एक बरसाती थी. जिसका किराया मेरे एक दोस्त की बहन उठाती थी। उसी से मुझे जेव खर्च भी मिलते थे। भाषाओं से मेरा लगाव बचपन से ही था। इसके अलावे जर्मन भाषा मुझे बड़ी युक्तिसंगत लगी। मुझे ज्यादे समय न लगा और मै क्लास का वेस्ट स्टूडेन्ट बन गया। क्लास के कई डेलियाडों या डेलियाडनियों का ध्यान मेरी तरफ गया। पहल की एक मोटी सी लड़की. जो करोलवाग मे रहती थी। उसके घर वालों का करोलबाग मे ठीकठाक फैला विजनेस था। उसने मुझे पापियों नामका एक अंग्रेजी मे उपन्यास पढने को दिया जिसे पढ कर मैने उसे वापस कर दिया। दो और लड़कियॉ थी मेरे क्लास मे. जो एक दूसरे की सहेलियॉ भी थीं। इनका भी मुझे एक समवेत आमंत्रण किसी एक डिस्को का मिला जिसे मैने मना कर दिया। एक हौज खास की लड़की ने मुझे कनाट प्लेस के एक कैफे मे इन्वाइट किया और सारे समय अपने हॅाथ के बनाये ग्रिटिंग्स कार्ड दिखाती रही। वो तरह तरह के फूलों की पंखुड़िया प्रेस कर के सूखाती थी और फिर उन्हे कार्डो पर सफाई से चिपकाती थी। उसके बनाये कार्डस यहॉ तक कि दिल्ली के अच्छे अच्छे बुटीको मे भी विकते थे। अभी तक किसी भी लड़की का मै नाम सिर्फ एक वजह से नही ले पा रहा हू क्यों कि उनके नाम ही मुझे याद नही आ रहे हैं। दो लड़कियों के नाम आज तक मुझे याद हैं। यहॉ तक कि उनके पेशे भी मुझे याद है। इनमे से एक का नाम मधु और दूसरे का शीला था। मधु किसी एक सरकारी दफ्तर मे काम करती थी. जहॉ डी टी एस की बसों पर छपने वाले विज्ञापनों के आफर्स आते थे. डावर के च्यवनप्राश से लेकर बन्दर छाप दन्तमंजन तक के। मैक्स म्यूलर वो एक गाढी नीले रंग के फियेट से आती थी जो उसकी अपनी थी। मुझे उसकी नौकरी रिश्वतों वाली लगती थी। एक दिन क्लास के बाद वो मेरे पास आईः

तुम्हारे पास ढंग के कपड़े वपड़े नही हैं!

ःक्यो!कहॉ से मै तुम्हे वेढंगा लगता हूॅ!

ःकुर्त्ते पैजामे के अलावे तुम और कुछ पहनना ही नही चाहते!

ःनही।

ःठंढ मे क्या करोगे!

ःकम्वल ओढ कर घूमूंगा।

ःकुछ ढंग के कपड़े क्यों नही सिलवा लेते!

अव मेरा माथा भभकाःतुम मेरे पास आज के बाद ऐसे सवालों के साथ मत ही आना। रहने दो मुझे मैक्स म्यूलर मे चैन से। तुम्हे जो ओढना या पहनना

है पहनती रहो खरीदती रहो। अब मुझे तुमसे सीखना पड़ेगा कि मुझे क्या पहनना और क्या ओढना चाहिये। मै जाकर कैन्टिन मे बैठ गया। इस लड़की मे भी बड़ा घमन्ड था अपने अनाप शनाप की कमाई पर।
दूसरे दिन वो क्लास के बाद फिर मुझे जर्बदस्ती रोक ली ...
ःदरअसल मै तुम्हे होटल ओवेराय मे लन्च पर इन्वाइट करना चाहती थी और तुम कल मेरी बातों का बुरा मान गए।
अब मुझे उसे साफ साफ बताना पड़ाःमै खुश हूँ कि तुम्हारे दिल्ली मे मेरे सर के ऊपर एक छत है और दो वक्त का खाना है। इससे ज्यादे मेरी औकात नही है और ऐसे भी मुझे शान शौकतों से बड़ी घबराहट होती है। मै तुम्हारा कोई आमंत्रण नही स्वीकारूंगा. ये तुम याद रखना।
वो अपना पैर वैर न पटकी और न मुझे भिखमंगा ही कही। चुपचाप चली गई।
शीला की कहानी थोड़ी सी लम्बी है। वो ग्रेटर कैलाश मे एक अपार्टमेन्ट लेकर किराये पर रहती थी। उसे मेरे कुर्ते पैजामे से कोई शिकायत न थी। उन दिनो मेरी दाढी भी बढी हुई थी। मैक्स म्यूलर मे उसका आना जाना थ्री व्हीलर मे ही होता था। वो मार्लवोरो की मेन्थोल सिगरेटें पीती थी। एक दिन उसने रविवार के दिन अपने घर पर दोपहर के खाने का न्योता दिया और मै गया भी। बड़ा ही भव्य था उसके डेढ कमरे का अपार्टमेन्ट। साफ सूथरा सजा सजाया। दोपहर के खाने पर उसने अपने हॅाथों से बासमती चावल सांभर और चने दाल के बड़े बनाये थे। खाने के दौरान बिना पूछे वो अपने बारे मे खुद ही बताती रही। वो गुंटुर की रहने वाली थी जहॅा उसे अपनी मॉ और छोटी बहन के लिए हर महीने पैसे भेजने पड़ते थे। गुंटुर मे इन दोनो के सारे खर्चे वही उठाती थी। दिल्ली मे वो बस तीन साल से ही थी पर वो दिल्ली मे क्या करती है ये नही बताया। मैने भी उससे इस बारे मे नही पूछा।
शीला के घर मै कुल बस तीन बार गया। हर बार मुझे उसके घर कोई न कोई साउथ इन्डियन डिश ही खाने पर मिला। जब मै तीसरी बार उसके घर गया तो वो एक कैमकाट पर लेटे एक औरत से अपनी मालिश करवा रही थी। उसके बदन पर एक छोटे शौर्टस और एक पतले ब्रा के अलावे कुछ न था। अपार्टमेन्ट का दरवाजा मालिश करने वाली औरत ने ही खोला और हलो कहके फिर अपने काम पर जुट गई।
शीला थी तो एक साधारण रूप रंग की लड़की. पर मेक अप वगैरह के बाद तो उसका रूप रंग ही निखर उठता था। इस तीसरी मुलाकात मे उसने बिना किसी लाग लपेट के मुझे बता ही दिया कि वो दिल्ली मे क्या करती है। दिल्ली के सारे फाइव स्टार होटल्स मे विदेशी मेहमानों के मनोरंजनो के लिए फोटो की एक एल्बम होती है। फोटो के नीचे हर आम्रपाली की उम्र ही नही उनकी लम्बाई चौड़ाई और परिधियों के सही माप भी लिखे होते है। शीला की फोटो भी हर होटल के एल्बमों मे थी। समय और रेट वगैरह होटल ही निर्धारित करता था। एक रात के दो हजार रूपये ऊपर से छोटी मोटी भेटें खाना पीना मुफ्त मे। उन दिनो हमारे यहॅा जर्मन टूरिस्ट आते भी बहुत थे। शीला ऐसे ही मैक्स म्यूलर भवन थोड़े ही आती थी। जर्मन भी थाई लैन्ड और फिलीपीन के छोटे कदों की औरतों की खीची ऑखों से ऊब चुके थे। उन्हे हमारे माथों की बिंदिया नितम्ब तक लहराते लम्बे बाल और साड़ी ब्लाऊज के बीच की खुली नाभी बड़ा आलोड़ित करती थीं और करती हैं। इन्हे हमारी आम्रपालिया बड़ी भाती थी। इनके आने के वेग को हमारे देश की दो बड़ी ताकतों ने आज तक रोक रखा है। एक तो भिखमंगों ने और दूसरे नाना प्रकार के दालालों ने। वरना हमारे देश के टूरिस्ट डिपार्टमेन्ट की आज ये हालत न होती। वहरहाल शीला एक ऊँचे समाज मे एक ऊँचे स्तर की रंडी थी। मेरा आधा खाना प्लेट मे ही धरा रह गया। मै तमतमाया बिना शीला से विदा लिये अपने बरसाती मे वापस लौट आया। उन दिनो मै परिवार के पेट भरने के लिए किसी क्रान्तिकारिनी का रंडी बनना या फिर अपने स्त्रीत्व या पत्नीत्व का परित्याग एक उत्सर्ग की भांति लेता था। इस ढंचे मे मै शीला को स्वीकार न कर सका। रहना है ग्रेटर कैलाश मे अपार्ट मेन्ट. घूमना होता है थ्री व्हीलरों मे. फैलाना होता है अपनी टांगे और ऊपर से पचपन दिखावे। मेरा संस्कार तिलमिला उठा। शीला का दूसरा उपनाम मेरी सुसंकृत या जन्गली भाषा मे बस रंडी ही था जिसका अनुवाद मैने किसी दूसरी भाषा मे भी न किया। उससे मेरा सम्वन्ध कुछ समय के लिए टूट गया।
मिसेस ब्रायर के एप्रोच पर मुझे बाद के दो सिमेस्टर एक साथ करने को मिल गए और मेरे एक सिमेस्टर की फीस भी उन्होने माफ करवा दी। मेरी एक क्लास शाम चार से छ बजे तक चलती थी। गर्मियों के दिन थे। दोपहर के समय मेरी बरसाती भट्ठी की तरह तपती थी। इसी वजह से सुवह की क्लास के बाद मै मैक्स म्यूलर भवन मे ही रूक जाता था. जहॅा कि लाईब्रेरी एय्रर कन्डिसन्ड थी। घन्टों मै वही बैठा जर्मन पत्रिकायें उलटता पलटता रहता था या फिर वहॅा की कैन्टिन मे दोस्तों के साथ बैठ कर गप्पें मारा करता था। दिल्ली मे मुझे अब इन तथाकथित दोस्तों की कोई कमी न थी।
मैक्स म्यूलर भवन के दूसरे सिमेस्टरो मे मेरी क्लासें टीना और अर्चना लेती थीं। टीना मद्रास की रहने वाली थी और अर्चना मुम्बई की। माधुरी से मुझे बाद के दिनो मे पता चला कि टीना की तय की गई सगाईयॅा कई बार टूट गई थीं। वो अपने दहेज का सामान खुद ही जुटा जुटा के थक चली थी. पर उसे कोई वर ही न मिल रहा था। उसकी जवानी गदराती जा रही थी। क्लास मे सबकी नजर बस उसके सीने पर ही टिकी रहती थी।
अर्चना अपनी छोटी वहन के साथ माधुरी के माता पिता के मकान मे एक कमरा किराये पर लेकर रह रही थी। उसकी ये छोटी वहन दरअसल मे उसकी अपनी बेटी थी। मुझे फिर एक बार चौकना पड़ा। मैक्स म्यूलर के लैंगवेज डिपार्टमेन्ट का हेड एक जर्मन ही था स्रोड अल्वर्स जिसे आर्चना राखी वॅाध कर हर वर्ष उसे एक वहुचर्चित गाना भी सुनाती थीःभईया मेरे राखी के वन्धन को न भूलाना भईया मेरे। स्रोड अल्वर्स के अलावे सारा मैक्स म्यूलर हॅसते हॅसते लोट पोट हो जाता था। अल्वर्स अपने माथे का टीका तीन दिन तक पोछता ही नही था। अर्चना को रक्षा बन्धन पर अल्वर्स से पच्चास मार्क तो मिलते ही थे. अगली वहन बन कर उससे चिपट भी जाती थी और मिनटो तक चिपट कर अपने भाई से अपने वदन सहलवाती रहती रहती थी। मैक्स म्यूलर मे सबसे ज्यादे क्लासे उसी के पास थीं और सबसे ज्यादा वही कमाती भी थी।
अब मै वापस लौटता हूँ माधुरी के पास।
कैन्टिन मे बैठा मै जब तब उसे अपनी नजरे झुकाये आते जाते देखता था। बस वो एक बार मुझे देख कर आगे बढ जाती थी। मै उन दिनो छोटी मोटी अतुकान्त कवितायें लिख लिया करता था। कुछ अपनी कुछ चुराई जिसका मै जर्मन भाषा मे अनुवाद कर के माधुरी को थमा देता था। कभीं कभार मै उसे बस स्टैन्ड तक छोड़ने भी जाता था। इसी बीच मेरी जान पहचान सोवियत हाऊस के अध्यक्षिका से हो गई थी जिसके जरिये मुझे थोड़े बहुत ट्रान्सलेशन्स के काम मिलने लगे थे। उसके अलावे हाऊस मे किसी को भी पता न था कि मुझे रसियन आती है यहॅा तक कि मेरी टीचर को भी नही। ट्रान्सलेशनों मे ज्यादेतर कामर्शियल लेटर्स ही होते थे। मुझे एक पन्ने का बीस रूपया मिलता था। इस जरिये मेरे पास एक आमदनी थी। अब मै जब तब माधुरी को सोवियत हाऊस के मिन्स्क रेस्त्रा मे बुलाने लगा। शुरू के दिनो मे ज्यादेतर हम अपने या अपने परिवारों के वारे मे ही बातें करते थे जिनका कोई अन्त ही न होता था। घर से उसे आठ बजे शाम के बाद बिना किसी कारण के वाहर रहने की कोई अनुमति न थी। मै उसे उसके घर के नुक्कड़ तक पहुँचा आता था। अभीं तक हमारे सम्वन्ध एक टीचर और स्टूडेन्ट जैसे ही थे. पर ये सम्वन्ध कहीं न कहीं पिघल रहा था। आए दिन हम

शाम की क्लास के बाद कनाट प्लेस के एक काफी हाऊस मे भी जा बैठते थे।एक झूठे ओढे व्यक्तित्व मे मै उसे दिन व दिन प्रभावित किये जा रहा था।माधुरी मुझ पर मरती है.शायद यही मुझे मैक्स म्यूलर भवन मे साबित करना था।पता नही मुझे अपने किस अहम की पुष्टि चाहिये थी!मैं माधुरी पर आम भाषा मे छाता चला जा रहा था।अब क्लास के बाद वो मेरे इन्तजार मे गेट के बाहर मीरा की तरह खड़ी दिखती थी।न तो उसे दीन की परवाह रहती थी और न दुनिया की।रविवार के दिन वो मेरे बरसाती तक मे आने लगी थी।
एक बार मैक्स म्यूलर भवन का तीन ग्रूप इकट्ठे पिकनिक मनाने हरियाना के किसी पिकनिक स्पाट पर गया हुआ था।माधुरी भी अपने ग्रुप के साथ आई थी।उसका ज्यादे समय मेरे ही साथ बीता।हमारा जब तब मिलना जुलना किसी से भी छुपा न था लेकिन स्थिति इतनी गम्भीर हो चली है.ये बात लोगों पर पिकनिक वाले दिन जा खुली थी।मै अपनी जीत पर मन ही मन फूला न समा रहा था।
एक दिन क्लास के बाद मै उसे बस से उसके घर तक छोड़ने गया।घर के नुक्कड़ पर उसे छोड़कर मै वापस लौटने ही वाला था कि हमारे समीप ही एक रिक्शा आ रूका।रिक्शे से भरे बदन की एक अधेड़ महिला उतरी और हमारी तरफ बढी।माधुरी बिना घबराये सहज भाव से मुझे बताईःवो देखो मेरी मॉ आ रही हैं फिर उसने मेरा परिचय भी करवाया।उसकी मॉ के माथे पर बल तक न पड़े और न तो उन्होने मेरा ऊपर से नीचे तक मुआयना ही किया.बल्कि बड़े प्यार से वो मेरा हॉथ पकड़ कर अपने घर भी लिवा गई।सफेद रंग का फाटक खोल कर एक छोटे से हरे भरे लॉन से होकर हम बरामदे तक जा पहुचें जहॉ माधुरी के पिताजी एक आरामकुर्सी पर बैठे अखबार पढ रहे थे।माधुरी को मेरे परिचय मे सिर्फ मेरा नाम ही लेना पड़ा था और वो अखबार एक तरफ रख कर उठ खड़े हुए।फिर उसकी बड़ी बहन भागी बाहर आई।उसे तो मेरा नाम तक पता था।बरामदे मे एक कप चाय पीकर अब मै चलना चाहा।माधुरी की मॉ शाम के खाने पर रूकने की जिद़ करने लगीं।मैने उन्हे संजीदगी से टाल दिया.पर रविवार के दोपहर के खाने पर आने का उन्होने मुझसे वायदा ले लिया था।माधुरी मुझे छोड़ने बस स्टैंड तक आई।
एक बार अचानक मेरे पिताजी दिल्ली आ पहुँचे।यूनिवर्सिटी के किसी काम से वो रूड़की आए हुए थे।उन्होने मेरा पता ढूँढ ही निकाला।दिल्ली मे वो मेरे साथ तीन दिन रहे।मुझे बर्लिन के टेक्निकल यूनिवर्सिटी का इनविटेशन मिल चुका था।बस मै अपने जर्मन भाषा के ग्रून्डस्टूफे का इन्तजार कर रहा था।मेरे पिताजी को मेरे कुर्ते पैजामे और मेरी दाढी से बड़ी चिढ लगी।वो मेरा हुलिया तो न बदल पाए पर दिल्ली मे उनके तीन दिन बस मेरे कपड़ो की खरीददारियों मे ही बीते।मेरा सूटकेस कपड़ों से खचाखच भर चला था पर मैने कुर्ता पैजामा पहनना न छोड़ा।
शनिवार के दिन पता नही क्या सोचकर मै एक सैलून मे जा घूसा।अपने बाल कटवाये।अपनी दाढी सफाचट करवाई।रविवार के दिन समय से नहा धोकर मैने न सिर्फ पैन्ट कमीज पहनी बल्कि टाई भी बॉधी।साल भर से ऊपर हो चले थे मुझे ऐसे कपड़े पहने।यहॉ तक कि मेरी मकान मालकिन भी मुझे पहचान न पाईसमय से मै माधुरी के घर जा पहुँचा।माधुरी ही नही उसका पूरा परिवार मुझे देख कर स्तब्ध रह गया।एक बार माधुरी मेरे कान मे फुसफुसाई भीःये एक्सट्रा इम्प्रेशन मारना जरूरी था क्या!
ःहॉ
ःक्यों!
ःताकि तुम्हारे घर वाले तुम्हे ताना न दें कि किस भिखमंगे को माधुरी अपना दिल दे बैठी है।
पूरा टेबल तरह तरह के खानो से भरा पड़ा था।पूड़ी पुलाव रायता छोले तरह तरह की सब्जियॉ सलाद और पता नही क्या क्या!माधुरी के परिवार मे खाना पीना तो टेबल पर होता था पर बगैर कॉटे छुरी के।खाने के दौरान उसकी मॉ ने एकाध बार मेरे परिवार के बारे मे पूछा।मैने उन्हे संक्षिप्त मे सब कुछ बता दिया।ज्यादेतर मै उन्हे मास्को के बारे मे बताता रहा जहॉ मै साढे सात वर्ष रहके आया था।मेरा बर्लिन जाना सभी को पता था।माधुरी से मेरे सम्बन्ध के बारे मे किसी कोने से स्पष्ट या अस्पष्ट कुछ भी नही पूछा गया।
मैक्स म्यूलर मे मेरे सिमेस्टर खत्म हो चले थे और मै अपने वीसे का इन्तजार कर रहा था जो पता नही किस कारण से टाला जा रहा था।बर्लिन मे सिमेस्टर शुरू होने को आए और मुझे वीसा ही नही मिल रहा था।मुझे ऐसा लग रहा था कि मुझे दिल्ली मे छ महीने और रूकना पड़ जाएगा।मै अपनी तय अवधि मे दिल्ली न छोड़ पाया।अगर छोड़ देता.तो ये सबकुछ नही घटता।माधुरी की मॉ जिद़ किये बैठी थीं कि मै अपना बरसाती छोड़कर उनके पास चला आऊँ जो मै नही चाहता था.पर मेरा ज्यादे समय अब उनके घर पर बीतने लगा।मैक्स म्यूलर भवन मे छुट्टियॉ चल रही थी.पर माधुरी को अपने प्राइवेट टयूशनो पर जाना पड़ता था।आए दिन मै उसके पिताजी का स्कूटर लेकर उसे यहॉ वहॉ पहुँचा दिया करता था फिर समय से उसे वापस घर ले आता था।माधुरी मेरा कमर कसके पकड़ी रहती उसका सर मेरे कन्धे पर टिका होता।शाम के खाने के बाद हम रोज ही समीप के आर्य समाज मन्दिर के बड़े विस्तृित लॉन मे टहलने जाते थे।एक पल के लिए भी माधुरी मेरा हॉथ न छोड़ती थी।घन्टों हम लॉन मे घूमा करते थे।वो मुझसे तमाम आश्वासने लेती रहती थी और मै उसे बेझिझक देता रहता था क्यो कि मुझे इस सम्बन्ध के अन्त का पता था जो मेरी तरफ से निर्धारित हो चुका था।बस रह रह कर मुझे एक ही बात कचोटती थी कि एक दिन मेरे हॉथो एक समवेत विश्वास का हनन होना है।जब किसी सम्बन्ध मे पाने और खोने जैसे गन्दे विचार बिना बुलाये मेहमानों की तरह आसन लगाकर कुंडली मार के बैठ जाते हैं तब ऐसे सम्बधों की उम्र मै उनके प्रारम्भ मे ही जान लेता था।पता नहीं मै अपने आप को क्या समझे बैठा था!ऐसा मै क्यों सोचने लगा था कि अपने और माधुरी के सम्बन्ध मे माधुरी को बहुत कुछ पाना है और मुझे बहुत कुछ खोना है!
मुझे परम्पराओं का डर न कभीं था और न है.पर उनसे मै बिना किसी ठोस वजह के कभीं नही टकराता।माधुरी के पत्नीत्व या उसके समर्पण को मै अच्छी तरह जानता था.पर एक बात और मेरे सामने बिल्कुल स्पष्ट थी कि दया और सहानुभूति की कमजोर डालियों पर किसी तरह का कोई भी घोंसला नही बनाया जा सकता।इस तथ्य ने मुझे परम्पराओं से और अपने आप से टकराने से रोक रखा था।
माधुरी के चेहरे पर ही नही उसके पूरे बदन पर बेहद अनावश्यक बाल थे।उसे रोज ही एक लेडी डाक्टर के पास पिनसेट से अपने चेहरे के बाल तुड़वाने जाना पड़ता था।उसके कमाई का एक बड़ा सा भाग ये लेडी डाक्टर हॅथिया लेती थी।उसकी ठूढी मे अनगिनत छोटे छोटे दाने थे।यही वजह थी कि उसे हमेशा अपनी नजरें नीची रखनी पड़ती थी।
एक बार मै उसके घर पर रात मे ठहर गया।उसकी मॉ ने मेरा बिस्तर ड्राइन्ग रूम के एक सोफे पर लगा दिया और अपने पति का एक धुला धुलाया कुर्त्ता पैजामा रात मे मेरे पहनने के लिए रख गई।मै अपने कपड़े बदल कर एक पत्रिका पढने बैठ गया।घर के दूसरे लोग सोने जा चुके थे।तभी माधुरी ड्राइन्ग रूम मे आई।उसने एक छींट का फ्रॉक पहन रखा था जो उसके घुटने तक आता था।वो चुपचाप आकर मेरे बगल मे बैठ गई।उसके पैरों पर बाल ही बाल थे और यहॉ तक कि उसके पैरों की एक उॅगली तक सीधी न थी।वो अपनी नजर नीचे किये अपने पैरों की उॅगलिया अपने

चप्पलों से छुपाने मे लगी थी।
अचानक वो सिसकियों मे डूब गई और मेरे कन्धे पर अपना सर रखकर मिनटों रोती रही।मुझे आज तक उसकी कही एक बात याद है जो उसने अपने सिसकियों के बीच मुझसे कहा थाःपता है प्रमोद! हमारे ईश्वर को हमारे एक दूसरे से मिलने की बात मालूम थी।उसने मुझे कुरूप बना दिया।पता नही उसने तुम्हे इस कुरूपता से लड़ने की शक्ति दी है या नही!अगर दी है तो मै उन्हे माफ करती हूँ।
माधुरी रोती रही और मै अपनी शक्ति टटोलता और ढूँढता रहा जिसका एक रेशा तक मुझे दूर दराज तक न मिला।
सौन्दर्य और चरित्र अलग अलग उम्रों की मॉगे है।जिस उम्र मे मै था.सौन्दर्य उसकी पहली मॉग थी।जीवन की एक अवस्था पर दूसरी अवस्था जर्व दस्ती नही लादी जा सकती और न ही उम्र मे कोई हेरफेर किया जा सकता है।
उसकी बड़ी वहन मदिरा का बड़ा गलत व्याह हो गया था।उसकी ससुराल थी तो बड़ी सम्पन्न.पर उसे अपने तीन वर्षो के वैवाहिक जीवन मे बस प्रताड़नायें ही मिलीं।उसका दोष बस इतना ही था कि वो भी अपनी वहन की तरह कोई मेनका न थी।बड़ी मुश्किल से उसे ससुराल की कैद से छुड़ाया गया।जिस मदिरा को उसके माता पिता ने फूल की एक पंखुड़ी से भी न छूआ था.वही मदिरा वापस दिल्ली अपने वदन पर सैकड़ो नीले निशान लिए सूजे मुँह के साथ वापस आई।माता पिता के प्राण कन्ठ मे आ कर समा गए।उसके मुँह से एक शव्द तक न फूटता था।जब तव माधुरी की मॉ मदिरा के शादी का एलवम अपने हॉथ मे लेकर फूट फूट कर रोती रहती थीं।उनके पति तो ऐसे भी निःशव्द हो चले थे।इस परिवार मे दो अहिल्यायें थीं जिनका उद्धार किसी राम के हॉथों होना था।पहला राम तो रावण ही निकला।वचा मै।मै भी किसी सूरत मे राम नही था।
मै जव तव माधुरी की डवियाई ऑखें देखता था जिनके आमंत्रण की भाषा मै समझते हुए भी टालता रहा।जो कुछ भी उसके पास है.वो अपने राम को ही सौंपे।
एक वात मेरी समझ मे आज तक नही आइ हैःक्यों मेरे जीवन मे एक परिचिय परिचय के बाद अपना आकर्षण इस कदर खो देता है!
मै कायरों की तरह उसके जीवन से दूर चला गया.बिना एक शब्द बोले.बिना किसी आहट के।मुझमे माधुरी के परिवार को एक बार फिर से ऑसुओं मे डूबते देखने की हिम्मत न थी।इस परिवार के पूरे वल से वढते लत्तर को मुझे समय से ही सींचना वन्द कर देना था।परन्तु मेरा अपना अहम ही वीमार था।मैने वेस्ट पटेल नगर की वरसाती छोड़ दी और न्यू राजिंदर नगर मे एक कमरा लेकर रहने लगा।दिल्ली मे रहते हुए भी मै माधुरी से हजारो मील दूर जा चुका था।माधुरी वेहद संवेदनशील थी।मुझे ढूँढना और फिर मुझे किसी उहापोह मे डालने का उसने कोई औचित्य नही देखा।
अव मेरे पास वस दो ही साथी वचे थे मनमोहन और राजेन्द्र।मैने अपने तमाम दूसरे सम्पर्क तोड़ लिये।राजेन्द्र मैक्स म्यूलर की कैन्टिन मे काम करता था।मेरी उँगली उठते ही वो सब कछ छोड़छाड़ कर भागा आता था।इस कैन्टिन का हिसाव मै महीने के अन्त मे करता था।राजेन्द्र मेरी सारी चाय हिसाव खाते मे लिखता ही न था।उसे मेरा नया पता मालुम था।जब तव वो मुझसे मिलने भी आता था।आते ही वो मेरे कमरे की सफाई मे लग जाता था।मै मना कर कर के थक गया पर वो मानता ही न था।बाजार से कोला या खाने पीने का सामान भी वही लाता था।चार छ घन्टे तो वो मेरे पास ठहर ही जाता था।मै ये अच्छी तरह महसूस कर रहा था कि वो थोड़ा मुझसे खींचा खींचा सा रहता है।कारण मै समझ सकता था।मैने उससे कुछ नही पूछा।एक दिन उससे न रहा गयाःभईया! माधुरी दीदी से आप की कोई खटपट चल रही है क्या!
ःनही तो
ःफिर आप उनसे मिलना जुलना क्यों वन्द कर दिये!
ःअव मै तुम्हे क्या वताऊँ!
ःकोई न कोई कारण तो होगा ही!
ःअव मै तुम्हे और क्या वताऊँ राजन!अकारण भी कई कारण होते हैं।तुम मुझे समझ नही पाओगे।उसने फिर मुझसे कुछ नही पूछा।
उसे वस स्टैन्ड तक छोड़ने मै हमेशा ही जाता था।इस वार भी गया।रास्ते मे अपनी रूऑसी आवाज मे वो जो मुझे सुनाया.उसे सुनकर तो मेरा दिमाग ही झनझना उठा
ःभईया! एक दिन माधुरी दीदी अल्वर्स साहव से मिलने आई थीं।मै उन्हे चाय देने गया था।अल्वर्स साहव दीदी से कुछ जर्मन मे कहे जा रहे थेःनिस्ट फेरडिनेन राजियरन।पहले तो मेरी समझ मे कुछ न आया।जव दीदी साहव के कमरे से वाहर निकलीं तो मेरी समझ मे सारी बात आ गई।दीदी ने अपनी दाढी वनानी वन्द कर दी है।उनको तो पहचाना तक नही जा सकता था।
रात भर राजेन्द्र के शब्द पिघले शीशे की नाई मेरे कानो मे रिसते रहे।मै बस करवटें ही बदलता रहा।शर्म हया एक तरफ रख कर वस मै अपने को ही कोसता थाः मैने इस नागिन को क्यों छेड़ा!
एक बार दिल्ली मे मुझे एक सपना भी आया।मै एक जेल के आइशोलेसन मे हूँ।अचानक मेरे दरवाजे पर एक दस्तक पड़ी और मुझे एक बड़ी भारी गूंजती आवाज सुनाई पड़ीःमुजरिम! तुम्हे न्यायालय मे चलना है।मेरा दरवाजा खुला।मेरे सामने डोलची लिए एक संपेरा खड़ा था।मै वाहर निकला नहीं कि वो अपनी डोलची से एक सांप निकाल कर मुझ पर फेका।वो सांप मेरे दोनो हॉथ जकड़ कर बैठ गया।फिर उसने एक दूसरा सांप फेका जो मेरे दोनो पैर जकड़ बैठा।पता नही कितने सांप उसने मुझ पर फेके!सब के सब मुझे यहॉ वहॉ से जकड़ कर अपने नथुने उठाए फूफकारे जा रहे थे।ऐसी ही हालत मे वो संपेरा मुझे न्यायालय तक ले आया।मै कूदते फुदकते न्यायालय तक आया।जज की कुर्सी पर माधुरी के पिताजी लाल रंग का चोंगा पहने बैठे थे।उनके सर पर एक काले रंग का टोपा था.जिसमे फुलन्तरू की जगह एक काला नाग लटक रहा था।वहॉ सिर्फ कठघरे ही कठघरे थे.जहॉ वो तमाम लोग खड़े थे जो मुझे मैक्स म्यूलर भवन के जरिये जानते थे।मुझे देखते ही माधुरी की मॉ दहाड़ीःदुष्ट कमीने पापी।दूसरे कठघरों से वस एक ही समवेत नारा गूंज रहा थाःगली गली मे शोर है.वनारसी साला चोर है।मेरे वदन से लिपटे सांप मुझे डसे जा रहे थे।एक तो अपनी पूंछ ही मेरे नाक मे घूसेड़े जा रहा था।यहीं पर मेरी नींद टूट गई।मै पसीने मे नहाया हुआ था।ये सपना मुझे दुवारा तो नही आया.लेकिन वो मुझे आज तक याद है।
मेरी शाम मनमोहन के साथ ही बीतती थी।जब तव माधुरी का भी प्रसंग आता था।मनमोहन मुझे उदास नही देख पाता था।भड़भड़ाने लग पड़ता थाःमार गोली एनू यार।जर्मन बीच त्वानू एक से एक गोरी कुड़िया मिलैंगी।
मनमोहन के सोचने और समझने की दौड़ बड़ी छोटी थी.लेकिन वो एक नम्बर का खुददार था और एक बहुत ही अच्छा दोस्त था।
मुझे वर्लिन का वीसा मिल गया था और मेरे वर्लिन जाने का समय समीप सरकता आ रहा था।मुझे धीरे धीरे इस बात का एहसास हो चला था कि ये

मेरी विदेश की आखिरी उड़ान है।अब मेरा अपना देश या मेरे अपने बस मेरी स्मृतियों मे ही जीयेंगे।

पालम मुझे छोड़ने मनमोहन और राजेन्द्र आए।उन्होने ही मेरा सूटकेस भी ठीक किया।कमरे के बाकी सामान मैने उन्हे ही दे दिये।रात के दस बजे मेरी फ्लाईट थी।ये दोनो सुबह मेरे पास नौ बजे ही आ पहुॅचे थे।पालम एयरपोर्ट पर चेक इन से पहले राजेन्द्र तो फूट फूट कर रोने लग पड़ा।मनमोहन के नथुने फड़क रहे थे।बड़ी मुश्किल से वो अपनी रूलाई रोके हुए था।जब मै उससे गले लगा तब उसके भी वश का कुछ न रहाःब्रावा खत खुत डालते रहना।हम गरीब नू भूल न जाणा।

मै बर्लिन आ गया.जहॅा की व्यस्तताओं ने मुझे आठ वर्ष तक अपने देश न जाने दिया।मनमोहन और राजेन्द्र को मै नियमित रूप से पत्र लिखता रहा।उनके भी जवाब मुझे मिलते रहे।एक लम्बा सा पत्र मैने माधुरी को भी लिखा जिसका मुझे कोई जवाब न मिला।

आठ वर्षो के बाद मेरा हिन्दुस्तान जाने का संयोग बना।दिल्ली मे मै तीन दिन रूका।वहॅा मै अपने एक दोस्त के यहॅा ठहरा था.जिससे मेरी जान पहचान बर्लिन मे हुई थी।उसने अपनी गाड़ी और एक ड्राइवर मेरे साथ लगा दिया।एक दिन मै राजेन्द्र से मिलने मैक्स म्यूलर भवन गया।मैक्स म्यूलर जाने मे मुझे थोड़ी बहुत घबराहट तो हो रही थी फिर भी मै वहॅा गया।गाड़ी के पार्किन्ग के दौरान अचानक मैक्स म्यूलर से बाहर निकलती मुझे माधुरी दिखी।उसने सलवार कुर्त्ता पहन रखा था और गले मे एक दुपट्टा भी बॅाध रखा था।मै झटपट गाड़ी से बाहर निकला।मुझ पर नजर पड़ते ही वो सकपका सी गई। फिर भी वो मेरे पास आई।

ःवी गेट एस डीयर प्रमोद!बर्लिन इन्ज्वाय कर रहे हो न!कितने दिनो के लिए इन्डिया आये हो!दिल्ली मे कितने दिन रहोगे!उसने प्रश्नो की एक झड़ी सी लगा दी।मै जवाब ही देता रह गया।उसने मुझे कोई सवाल करने का मौका ही न दिया।जब तब वो एक लड़के को देख कर हॅाथों से कुछ इशारा कर देती थी.जो अपने मोटर सायकल के बगल मे खड़ा शायद उसी का इन्तजार कर रहा था।अब मुझे उससे पूछना ही पड़ा

ःकौन है ये लड़का माधुरी!

ःराकेश

ःकौन राकेश!

ःउससे परिचय करोगे!

ःक्यों नही!

माधुरी के इशारे पर राकेश हमारे पास आया।वो हल्का सा लंगड़ाता था.लेकिन था बेहद स्मार्ट।माधुरी की सहजता पर मुझे बेहद आश्चर्य हो रहा था।

ःराकेश ये प्रमोद है।मेरा एक एक्स स्टूडेन्ट।जब क्लास के दूसर लड़के डेयर डी डस रटते थे तब़ ये जर्मन मे कविताये लिखता था।इसकी लिखी एकाध कवितायें मेरे पास भी कहीं रखी हैं।पढने का मन करे तो बताना।और प्रमोद ये राकेश है।ये भी मेरा एक्स स्टूडेन्ट था.पर अब मेरा मंगेतर है।लुफ्थान्सा मे काम करता है और हमारे साथ ही रहता है।

ःघर के दूसर लोग कैसे हैं!

ःठीक हैं।उनसे भी आकर मिल लो न।

एक बार फिर वो मेरा भोगा दुःस्वप्न मेरी ऑखों के सामने जीवन्त हो गया।

मै अपने मन का ज्वार भाटा बिना उजागर किये राकेश से गले लग कर मिला।मै उन दोनो को मोटर सायकल तक पहुॅचाने भी गया।राकेश से मै मैने गले लग कर माधुरी के सामने अपने दोनो हॅाथ जोड़े खड़ा हो गया।माधुरी मेरी टीचर थी और एक टीचर से उसकी सभ्रान्तता छीनी नही जा सकती है।बड़े प्यार से मेरे हॅाथों को अपने हॅाथों मे लेकर उसने मुझे आलेस गुटे उन्ट पास गुट आऊफ डीख आऊफ कहा.फिर मोटर सायकल की पिछली सीट पर जा बैठी और राकेश के कमर मे अपनी हॅाथें डाल दी।ये मेरी ऑखो से ओझल हो गए।

उल्टे सीधे ख्यालात मेरे दिमाग मे गूंजते रहे.जिन पर मैने अपना कान न धरा।जलन और अधिकार भाव जैसे दुगुर्णो के साथ मै इस दुनिया मे आया था।ये मुझे पता लग चुका था।मुझे इन्ही से लड़ना था और मै लड़ भी रहा था।राजेन्द्र की बातों से मुझे लगा कि अब माधुरी के जीवन मे बस सूर्योदय ही सूर्योदय है।एक पल के लिए मैने इसका अस्त चाहा.पर दूसरे ही पल ही मुझे अपने मन के ढीठपन पर बेहद गुस्सा आया।हर चीज की एक हद होती है।

ये मेरी माधुरी से आखिरी मुलाकात थी.आज से बारह साल पहले।राजेन्द्र और मनमोहन से मेरे सक्रिय सम्पर्क न रहे.पर मुझे इतना अवश्य पता चला कि माधुरी की शादी हो गई है।मै भी कभीं कभी उसके मंगलमय जीवन की कामना करता हॅू और राकेश को न चाहते हुए भी उसके उस हिम्मत और पुरूषत्व की दाद देता हॅू जो मेरे चरित्र मे न था और न है।

मेरा घर न बस पाया।मेरी सारी ढिठाईयॅा अब मेरा मजाक उड़ाती हैं।

एक टूटी दीवार पर अपने इकट्टे किये दूब और तिनके अपने पैरों के बीच दबाए बैठे बस मै ऊॅची ऊंची लहराती डालियॅा देखता रहता हॅू।घोंसला बनाना तो दूर रहा.मुझमे किसी छोटे उड़ान तक की हिम्मत न रही।

प्रमोद कुमार सिंह